IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"जोधपुर शहर के केन्द्रीय तथा राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि तथा अध्यापक प्रभावशीलता का अध्ययन"

प्रवीणा ओझा[1] , डॉ. सुरभि शर्मा[2]

1 शोधार्थी (शिक्षा), कला, शिक्षा एवं समाजिक विज्ञान संकाय, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर
E-Mail-ojha.praveena@gmail.com

2 शोधनिर्देशिका, व्याख्याता, शाह गोवर्द्धनलाल काबरा शिक्षक महाविद्यालय (सी.टी.ई.), जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर।

शोध सारांश–

प्रस्तुत शोध में केन्द्रीय तथा राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि तथा अध्यापक प्रभावशीलता का अध्ययन किया गया है। अध्ययन के लिए जोधपुर शहर के केन्द्रीय तथा राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के 50 शिक्षकों का चयन किया गया है। प्रस्तुत शोध में तथ्यों के संकलन हेतु शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि की जाँच करने के लिए पी. कुमार तथा डी.एन. मुथा द्वारा निर्मित प्रमापीकृत प्रश्नावली और अध्यापक प्रभावशीलता की जाँच करने के लिए पी. कुमार तथा डी. एन. मुथा द्वारा निर्मित प्रमापीकृत मापनी का उपयोग किया गया। निष्कर्ष में केन्द्रीय तथा राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि तथा अध्यापक प्रभावशीलता में असार्थक अंतर प्राप्त हुआ।

संकेताक्षर–

जोधपुर शहर, केन्द्रीय शिक्षा बोर्ड, राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, व्यावसायिक संतुष्टि, अध्यापक प्रभावशीलता

प्रस्तावना–

मानव जीवन में शिक्षा का विशेष महत्त्व है। यह प्रकाश का वह स्त्रोत है जो जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में हमारे सच्चे पथ प्रदर्शक का कार्य करती है। शिक्षा व्यक्ति और समाज के सर्वतोन्मुखी विकास की सशक्त प्रक्रिया है। शिक्षण प्रक्रिया के तीन प्रमुख अंग हैं– शिक्षक, शिक्षार्थी तथा सामाजिक परिवेश। ये तीनों अंग परस्पर अर्न्तसंबंधित होते हैं तथा एक–दूसरे को प्रभावित भी करते हैं। शिक्षा प्रणाली में शिक्षक के व्यवहार तथा व्यक्तित्व के विभिन्न कारकों का प्रभाव शिक्षार्थियों पर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। शिक्षकों की अपने व्यवसाय के प्रति संतुष्टि भी उनमें से एक कारक है। यदि शिक्षक अपने व्यवसाय से संतुष्ट है, तभी वे मनोवैज्ञानिक ढंग से शिक्षार्थियों की रूचि, क्षमता और उनकी मनोदशाओं को समझकर शिक्षण कार्य करेंगें, जिससे कि शिक्षार्थियों का सर्वांगीण विकास संभव हो सकेगा। इसी प्रकार शिक्षकों की प्रभावशीलता भी शिक्षार्थियों को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है। रवीन्द्रनाथ टैगोर के अनुसार, अध्यापक एक जलते हुए दीपक के समान है। जिस प्रकार एक जलता हुआ दीपक दूसरे दीपक को जला सकता है। उसी प्रकार एक प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला शिक्षक अपने शिक्षार्थियों को व्यक्तित्व

के सर्वांगीण विकास के लिए प्रोत्साहित कर सकता है, जिससे कि समाज व राष्ट्र को श्रेष्ठ नागरिक प्राप्त हो सके।

व्यावसायिक संतुष्टि एक अस्पष्ट अवधारणा है। परन्तु यह व्यक्ति की कार्य क्षमता तथा प्रभावशीलता को स्पष्ट रूप से प्रभावित करती है। किसी क्षेत्र या व्यवसाय में व्यक्ति तब तक रूचि नहीं लेता, जब तक उसे व्यावसायिक या कार्य संतुष्टि का अनुभव नहीं होता है। कटजैल के अनुसार,

"व्यावसायिक संतुष्टि एक वेतनभोगी का अपने कार्य के मूल्यांकन की शाब्दिक अभिव्यक्ति है। व्यावसायिक संतुष्टि के शाब्दिक मूल्यांकन को अभिवृत्ति प्रश्नावली या मापनी द्वारा क्रियात्मक बनाया जाता है, जिसके द्वारा वेतनभोगी अपने व्यवसाय को पसन्द, नापसन्द या लगभग समानार्थी शब्दों जैसे– संतुष्ट, असंतुष्ट स्तर पर अंकित करता है।"

इसी प्रकार अध्यापक प्रभावशीलता एक सापेक्षिक प्रत्यय है। अध्यापक प्रभावशीलता से तात्पर्य न केवल शिक्षक का अपने विषय का पूर्ण ज्ञाता होना ही नहीं है, वरन् शिक्षक के शिक्षण कौशल, व्यावसायिक योग्यताओं तथा शिक्षण उद्देश्यों को प्राप्त करने से भी है। चुकिं शिक्षार्थियों के लिए शिक्षक आदर्श होते हैं, अतः शिक्षकों के व्यवहार, व्यक्तित्व, संतुष्टि तथा अध्यापक प्रभावशीलता आदि से शिक्षार्थी अत्यधिक प्रभावित होते हैं जिनका स्पष्ट प्रभाव शिक्षार्थियों के सर्वांगीण विकास पर भी प्रतिबिम्बित होता है।

समस्या का औचित्य–

प्रस्तुत शोध समस्या न केवल शिक्षक के दृष्टिकोण से बल्कि शिक्षार्थी तथा राष्ट्रीय दृष्टिकोण से भी महत्त्वपूर्ण है। इस शोध में केन्द्रीय तथा राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि तथा अध्यापक प्रभावशीलता का अध्ययन किया गया है । व्यावसायिक संतुष्टि, प्रत्येक व्यक्ति के जीवन के सभी क्षेत्रों को प्रभावित करने वाला एक महत्त्वपूर्ण कारक है। राष्ट्र के भाग्य का निर्माण करने वाले शिक्षकों का अपने व्यवसाय से संतुष्ट होना अत्यन्त आवश्यक है। सामान्यतः व्यावसायिक दृष्टि से संतुष्ट शिक्षक ही उत्साहपूर्वक प्रभावशाली शिक्षण कार्य कर सकते हैं और एक विकसित राष्ट्र के निर्माण में अहम् भूमिका निभा सकते हैं। यदि शिक्षक अपने व्यवसाय से संतुष्ट नहीं होगें, तो उनकी पढ़ाने में भी रूचि नहीं रहेगी, जिससे इनका व्यक्तित्व तथा शिक्षण दोनों ही प्रभावहीन हो जाएगें तथा इसका शिक्षार्थियों की शैक्षिणिक उपलब्धता एवं व्यक्तित्व पर विपरीत प्रभाव पडेगा।

प्रस्तुत शोध हेतु चयनित चरों से संबंधित साहित्य का अध्ययन करने से ज्ञात हुआ कि केन्द्रीय तथा राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के शिक्षकों पर इन चरों से संबंधित व्यापक शोध अभी तक नहीं हुआ है, जबकि चरों की शिक्षा के क्षेत्र में महत्ता को देखते हुए इस क्षेत्र में भी शोध का औचित्य स्पष्टतया दृष्टिगोचर होता है।

समस्या कथन–

प्रस्तुत शोध हेतु निर्धारित समस्या कथन इस प्रकार है–

"जोधपुर शहर के केन्द्रीय तथा राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि तथा अध्यापक प्रभावशीलता का अध्ययन"

अध्ययन के उद्देश्य–

1) केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि का अध्ययन करना।
2) राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि का अध्ययन करना।
3) केन्द्रीय तथा राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4) केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के शिक्षकों की अध्यापक प्रभावशीलता का अध्ययन करना।
5) राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के शिक्षकों की अध्यापक प्रभावशीलता का अध्ययन करना।
6) केन्द्रीय तथा राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के शिक्षकों की अध्यापक प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध परिकल्पनाएँ–

1) केन्द्रीय तथा राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
2) केन्द्रीय तथा राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के शिक्षकों की अध्यापक प्रभावशीलता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

शोध परिसीमन–

प्रस्तुत शोध हेतु परिसीमन इस प्रकार किया गया है –

1) प्रस्तुत शोध के लिए जोधपुर शहर के केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के विद्यालयों के 25 शिक्षकों का चयन किया गया है।
2) प्रस्तुत शोध के लिए राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के विद्यालयों के 25 शिक्षकों का चयन किया गया है।

न्यादर्श–

प्रस्तुत शोध में समय, धन एवं श्रम की सीमा को ध्यान में रखते हुए जोधपुर शहर के केन्द्रीय तथा राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के निजी एवं सरकारी विद्यालयों में कार्यरत् 50 शिक्षकों का न्यादर्श के रूप में चयन किया गया है। न्यादर्श चयन हेतु विद्यालयों एवं शिक्षकों का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया है। चयनित न्यादर्श का संख्यात्मक स्वरूप निम्नप्रकार रखा गया है –

सारणी संख्या– 1 चयनित न्यादर्श का संख्यात्मक स्वरूप

शहर	माध्यमिक शिक्षा बोर्ड	शिक्षक
जोधपुर	केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड	25
जोधपुर	राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड	25
	योग	**50**

शोध विधि–

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया है।

शोध उपकरण–

प्रस्तुत शोध कार्य में दत्त संकलन हेतु निम्नलिखित उपकरणों का उपयोग किया गया है–

1) शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि की जाँच करने के लिए पी. कुमार तथा डी.एन. मुथा द्वारा निर्मित प्रमापीकृत प्रश्नावली Teacher Job Satisfaction Questionnaire का उपयोग किया गया है। इस प्रश्नावली में कुल 29 प्रश्न हैं, जिनके उत्तर हाँ या नहीं में देने हैं तथा समय सीमा 20 मिनट है।
2) शिक्षकों की अध्यापक प्रभावशीलता की जाँच करने के लिए पी. कुमार तथा डी. एन. मुथा द्वारा निर्मित एवं प्रमापीकृत अध्यापक प्रभावशीलता मापनी का उपयोग किया गया है। इस मापनी में अध्यापक के विभिन्न कार्यों व गुणों से संबंधित 69 कथन हैं।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी–

सांख्यिकी एक ऐसा विज्ञान है, जिसमें तथ्यों से संबंधित प्रदत्तों को एकत्रित किया जाता है, उन्हें सारणीबद्ध किया जाता है, व्यवस्थित किया जाता है एवं विश्लेषण करके निष्कर्ष प्राप्त किये जाते हैं, जिससे तुलनात्मक अध्ययन संभव हो सके तथा साथ ही साथ निष्कर्षों की सत्यता एंव शुद्धता की जाँच की जा सकती है।

प्रस्तुत शोध कार्य में प्रदत्त विश्लेषण एवं अर्थापन हेतु निम्नलिखित सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया किया गया है–

1) मध्यमान
2) प्रमाप विचलन
3) टी–परीक्षण

तथ्यों का विश्लेषण एवं व्याख्या–

1. केन्द्रीय तथा राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि के मध्यमान का विश्लेषण एवं निर्वचन–

चार्ट संख्या– 1 केन्द्रीय तथा राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि के मध्यमान का विश्लेषण

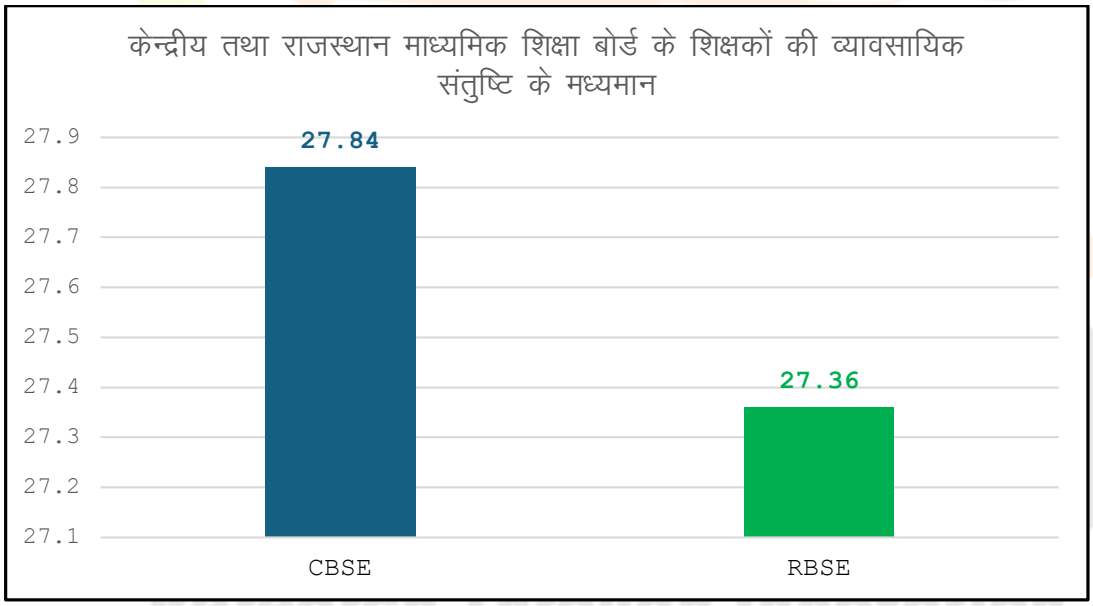

सारणी संख्या– 1 केन्द्रीय तथा राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि के मध्यमान का विश्लेषण

क्रम संख्या	माध्यमिक शिक्षा बोर्ड	मध्यमान	प्रमाप विचलन	t- मान	परिणाम
1.	केन्द्रीय	27.84	1.404	1.1692	असार्थक
2.	राजस्थान	27.36	1.496		

उपरोक्त चार्ट एवं सारणी के अनुसार केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि का मध्यमान 27.84 व प्रमाप विचलन 1.404 है और राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि का मध्यमान 27.36 व प्रमाप विचलन 1.496 है। मध्यमानों के अंतर की सार्थकता ज्ञात करने पर प्राप्त टी– मान 1.1692 है, जो 0.05 विश्वासस्तर के मूल्य 1.96 से कम है जो कि अंतर की असार्थकता को अभिव्यक्त करता है। अतः परिकल्पना– 1 स्वीकृत की जाती है।

2. केन्द्रीय तथा राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के शिक्षकों की अध्यापक प्रभावशीलता के मध्यमान का विश्लेषण एवं निर्वचन–

चार्ट संख्या– 2 केन्द्रीय तथा राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के शिक्षकों की अध्यापक प्रभावशीलता के मध्यमान का विश्लेषण

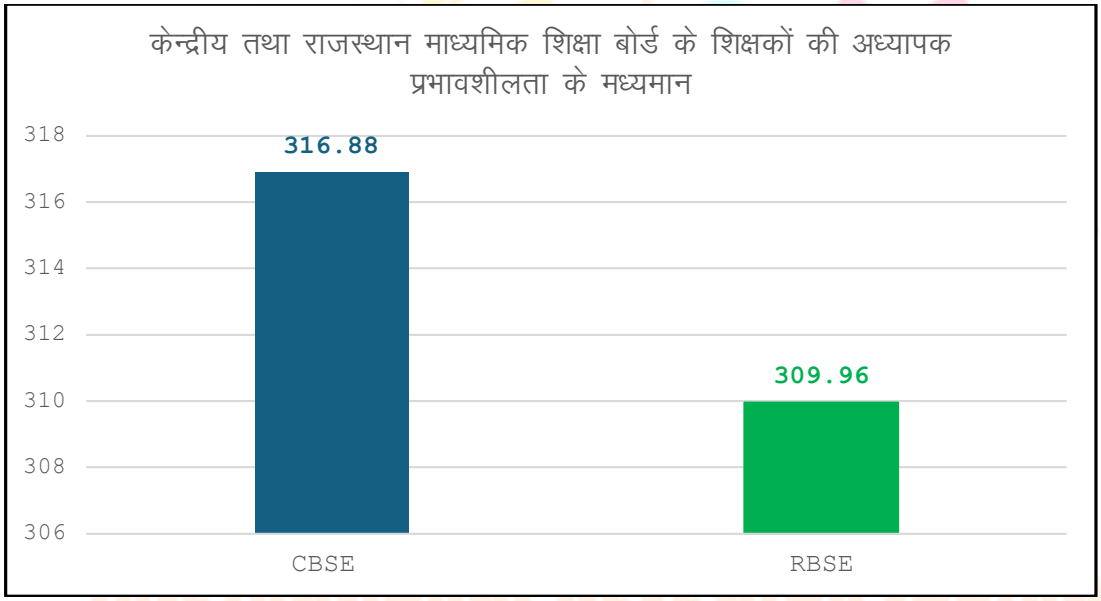

सारणी संख्या– 2 केन्द्रीय तथा राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के शिक्षकों की अध्यापक प्रभावशीलता के मध्यमान का विश्लेषण

क्रम संख्या	माध्यमिक शिक्षा बोर्ड	मध्यमान	प्रमाप विचलन	t- मान	परिणाम
1.	केन्द्रीय	316.88	25.208	0.5883	असार्थक
2.	राजस्थान	309.96	53.137		

उपरोक्त चार्ट एवं सारणी के अनुसार केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के शिक्षकों की अध्यापक प्रभावशीलता का मध्यमान 316.88 व प्रमाप विचलन 25.208 है और राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के शिक्षकों की अध्यापक प्रभावशीलता का मध्यमान 309.96 व प्रमाप विचलन 53.137 है। मध्यमानों के अंतर

की सार्थकता ज्ञात करने पर प्राप्त टी– मान 0.5883 है, जो 0.05 विश्वासस्तर के मूल्य 1.96 से कम है जो कि अंतर की असार्थकता को अभिव्यक्त करता है। अतः परिकल्पना– 2 स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पनाओं से सम्बन्धित निष्कर्ष–

1. केन्द्रीय तथा राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अतः परिकल्पना–1 स्वीकृत की जाती है।

2. केन्द्रीय तथा राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के शिक्षकों की अध्यापक प्रभावशीलता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अतः परिकल्पना–2 स्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष एवं सुझाव–

सांख्यिकीय विश्लेषण एवं परिणाम से स्पष्ट है कि केन्द्रीय तथा राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि एवं अध्यापक प्रभावशीलता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है। परन्तु इनके मध्यमानों के अध्ययन के आधार पर राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के शिक्षकों की अपेक्षा केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के शिक्षक व्यावसायिक रूप से अधिक संतुष्ट पाए गए तथा इनकी अध्यापक प्रभावशीलता भी अधिक पायी गयी। राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के पाठ्यक्रम की जटिलता, विद्यालयों में अपर्याप्त संसाधन्, शिक्षण के अतिरिक्त अन्य कार्यालयी कार्यों की अधिकता, अपर्याप्त प्रोत्साहन आदि कई कारक शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि पर नकारात्मक प्रभाव डालते हैं, परिणामस्वरूप राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के शिक्षकों की अध्यापक प्रभावशीलता भी नकारात्मक रूप से प्रभावित होती है। अतः वर्तमान परिपेक्ष्य में शिक्षा की गुणवत्ता को बनाये रखने तथा शिक्षार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के शिक्षकों की दशा में पर्याप्त सुधार की आवश्यकता है जिससे शिक्षक अपने व्यवसाय के प्रति न्याय कर सके।

संदर्भ ग्रन्थ–

1) सिंह प्रीति, अग्रवाल पद्मा, सक्सेना सुमनलता (2022); उच्चतर माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता का उनके विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन, International Journal of Creative Research Thoughts (IJCRT), Volume 10, Issue 7, ISSN: 2320-2882, www.ijcrt.org

2) Z. DhanaRaju, S. VijayaVardhini (2022); A Study On Teacher Effectiveness Among Secondary School Teachers, IJCRT, Volume 10, Issue 6, ISSN: 2320-2882, www.ijcrt.org

3) व्यास पिंकी, भारद्वाज मधु कुमार (2021); कोटा के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि एवं प्रभावकता का तुलनात्मक अध्ययन, National Journal of Research and Innovative Practices, Vol-6, Issue-11, ISSN No.: 2456-1355; www.edusanchar.com

4) कुमारी प्रियंका (2021); उच्च माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की व्यावसायिक संतुष्टि का अध्ययन, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language, Vol-9/45, ISSN 2348-3083, www.srjis.com

5) श्रीवास्तव सीमा (2020); शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के व्यावसायिक तनाव एवं कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन, International Journal Of Literacy and Education,1(1), 44-48, ISSN: 2789-1615, www.educationjournal.info

6) Singh Kashmir & Attri Ajay Kumar (2020); A Study of Teacher Effectiveness of Secondary School Teachers in relation to their Gender, Locale, Educational Qualification and Teaching Experience, IJCRT, Volume 8, Issue 12, ISSN: 2320-2882, www.ijcrt.org

7) Burroughs, N. *et al*. (2019); A Review of the Literature on Teacher Effectiveness and Student Outcomes. In: Teaching for Excellence and Equity. IEA Research for Education, vol 6. Springer, Cham. https://doi.org/10.1007/978-3-030-16151-4_2

8) Umasankar Dash & Pranab Barman (2016); Teaching Effectiveness of Secondary School Teachers in the District of Purba Medinipur, West Bengal, IOSR Journal Of Humanities And Social Science (IOSR-JHSS), Volume 21, Issue 7, Ver. VI1, PP 50-63, e-ISSN: 2279-0837, p-ISSN: 2279-0845. www.iosrjournals.org

9) Aina, J. K., Olanipekun, S.S., & Garuba, I. A. (2015); Teacher's Effectiveness and its Influence on Student's Learning, Advances in Social Sciences Research Journal, 2(4) 88-95

10) चारण, बाबूदान (2012); जोधपुर संभाग के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यरत अध्यापकों की व्यावसायिक संतुष्टि, शिक्षण प्रभावशीलता एवं व्यावसायिक दबाव का अध्ययन, शोध प्रबन्ध

11) बेस्ट, जे डब्लू एवं खान, जे.वी. (1996); रिसर्च इन एज्यूकेशन, प्रेंटिस हॉल ऑफ इण्डिया प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली

12) गैरेट, हेनरी ई. (1978); शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग, कल्याण पब्लिशर्स, नई दिल्ली

International Research Journal
IJNRD
Research Through Innovation